जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८० ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५६ वे ❖ अंक २-३ ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● दीपावली पूजन विधी	२३	● नफरत V/s प्यार	१०५
● दीपावली पूजन मुहूर्त	२७	● दु:ख मुक्तिका एक मात्र उपाय - आपकी मुस्कान	११५
● प्राकृताचे अभिजातत्व व जैन	२८	● सुख शांती का मूलमंत्र : निभना और निभाना	११६
● जैन जागृति - दीपावली अंक	२९	● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तरी प्रवचन	११८
● पूर्णिमा से भी अधिक उजली व उजाली अमावस्या	३१	● जैन धर्म और महात्मा गांधी	१२३
● श्री पावापूरी तीर्थ, बिहार	४३	● सच्चा उत्तराधिकारी	१२५
● रत्न संदेश	४५	● बिखरे मोती	१२७
● लौकिक एवं आध्यात्मिक पर्व : दीपोत्सव	४७	● हास्य जागृति	१२९
● सुविचार	४९	● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : दान	१३९
● इतिहास बताने आ गई, देखो भैया दूज	५१	● उत्तम व्यापाराचा फंडा	१५१
● क्लेश सब नि:शेष करने, ज्ञान की ज्योति जलाएँ	५५	● Password - पासवर्ड	१५३
● वाणी का संयम	५८	● जैन संप्रदाय तुलनात्मक तालिका २०२४	१६३
● आत्म-स्वाधीनता की खोज में शालीभद्र	६७	● ये मेरा गीत... जीवन संगीत... !	१६७
● नैतिक व सामाजिक जीव में कर्म की उपदेयता	९१	● आओ दीप जलाये - खुशियाँ लायें	१६९
● आओ, घर को आनंदमय बनाएँ	९९	● जिन शासन के चमकते हीरे	
		❊ श्री कंडरीक - पुंडरीक	१७१
		❊ श्री मम्मण शेठ	१७२

❊ पुणीआ श्रावक १७३
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा – घेरे में ना रह १७५
● दुकान १७७
● जैन धर्माची तत्त्वे आणि पर्यावरण संरक्षण १८७
● धर्माच्या कौलम मध्ये फक्त जैन लिहा १९१
● जीतो नगर, पुणे १९२
● श्री. विजयजी भंडारी – अध्यक्षपदी १९३
● चि. कैवल्य डागा – गोल्ड मेडल १९५
● पारस ग्रुप – अहमदनगर १९६
● रांका ज्वेलर्स – वाघोली शोरुम १९७
● श्री. बाळासाहेब धोका – पुरस्कार १९८
● श्री. वालचंदजी संचेती – पुरस्कार १९९
● श्री. रमणलालजी लुंकड – पुरस्कार १९९
● अर्हम् फांउडेशन, पुणे २००
● सहन करने का दिन २०१
● संस्कारित समाज का दीमक : प्री–वेडिंग फोटोशूट २११
● लडकियाँ क्यों दूसरे समुदाय में जाती हैं ? २१३
● वैराग्य वाणी – गुरु समर्पण की महिमा २१४
● प्रार्थना २१७
● मंत्राधिराज प्रवचन सार २१९
● योग्य एवं प्राकृतिक चिकित्सा २२२
● मरने की कला २२३
● विवाह एक ज्वलंत समस्या २२४
● जागृत विचार २२५
● अभिजातत्व : प्राकृतचे आणि मराठीचेही २२७
● गांधी हाऊस ऑफ ज्वेल्स – उद्घाटन २३९
● नवदुर्गा आणि स्त्रीच्या नऊ अवस्थांचे महत्त्व २४०
● भारतीय भाषाओं की जननी है प्राकृत भाषा २४१
● तीर्थंकर महावीर सेवा संस्थान २४७
● EWS सर्टीफिकेट बनाएँ २५१
● महा सिक्योरटेक एक्स्पो, पुणे २५२
● जैन विकास महामंडळ स्थापना २५३
● स्वर्णिम ज्वेलर्स – उद्घाटन २५५
● सुरक्षा २५७
● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

	एक वर्ष	त्रिवार्षिक	पंचवार्षिक
साध्या पोस्टाने	५००	१३५०	२२००
रजिस्टर पोस्टाने	८००	२२५०	३७००

या अंकाची किंमत १०० रुपये. Google Pay - Mob. : 9822086997

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

दीपावली पूजन विधी

मनुष्य के जीवन में उत्सवों का बड़ा महत्त्व है । इन पर्वों में दीपावली पर्व भारत वर्ष का एक श्रेष्ठतम पर्व है । दीपावली दीपोत्सव का, प्रकाशोत्सव का पर्व है । शक्ति, भक्ति और श्रध्दा का पर्व है । दीपक की शुभ ज्योति हमें ऊर्ध्वगमन का शुभ संदेश देती है, साथ ही अपने सान्निध्य में आनेवाले हर दीप को ही नहीं हर बुझे दीप को भी प्रकाशित करने का संदेश देती है । दीप से दीप जलते जाते हैं और दीपमाला बनकर दीपावली बन जाती है ।

यह पर्व मानव जीवन की पूर्णता और उसकी सार्थकता को जानने-समझने का पर्व है । हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ है, जो ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है । ज्ञान ही संसार में सबसे बड़ा एवं सर्वश्रेष्ठ प्रकाश है । जब ज्ञान का दीप जलता है, तब भीतर और बाहर दोनों ओर आलोक जगमगाता है ।

प्रभु महावीर के इस निर्वाण पर्व दीपावली के उपलक्ष में हम अहिंसा के दीप जलाये, मैत्री का प्रकाश फैलाये और आपस में प्रेमभाव बढ़ाने का प्रयास करें ।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था । वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए । चतुर्दशी और अमावस्या ये दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे । वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है । जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है । कई महानुभाव बडी श्रध्दा के साथ उपवास करते है । भ. महावीर का जाप करते हैं । पौषध के साथ उपवास करते हैं ।

कार्तिक सूद प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । नए वर्ष के प्रात:काल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है । सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवंतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते है । मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं ।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है । - संपादक

दीपावली पूजन विधी

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे ।

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

तीर्थंकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान है अत: अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें ।

गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदना करना ।

- शुभ मुहूर्त पर गद्दी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें।
- गद्दीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें ।
- पूजा के लिए साहित्य - खाने के पान डंढल सहित,

॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ 卐 श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः श्री शांतिनाथाय नमः

श्री पार्श्वनाथाय नमः श्री महावीराय नमः

श्री सद्गुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋध्दि,
श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजी का सौभाग्य,
श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल,
तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ती प्राप्त होवे !
श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

॥ श्री सरस्वती देवी नमः ॥ श्री महालक्ष्मी देवी नमः ॥

नूतन वर्ष

वीर संवत २५५१, विक्रम संवत २०८१

कार्तिक सुद १, शनिवार दि. २/११/२०२४

पूजन दिन : गुरुवार दि. ३१/१०/२०२४ –
शुक्रवार दि. १/११/२०२४

卐

सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप, अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल (Fruit), ईख (Sugar cane), नैवद्य (मिठाई), लक्ष्मी (झाडु), लाभ (लाह्या) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।

- पूजा करनेवाला घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बायीं तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खडा रखें ।
- नवकार मंत्र बोलते-बोलते पेन, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम से तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्नेपर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाऊंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंढल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।
मंत्र – ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूद्वीपे
दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे-भारतदेशे (पूना) नगरे
ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी
आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा वहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

॥ स्तुती ॥

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,

मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।
अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिन:।
हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्
परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।
मंत्रणामादिमं मंत्रं, तंत्र विघ्नौघ निग्रहे,
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ।।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते **जल, चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल, नैवेद्य** इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं) समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित प्रार्थना बोलें ।

।। श्री सरस्वती स्तोत्र ।।

सकल लोक सुसेवित पंकजा
वर यशोर्जित शारद कौमुदी,
निखिल कल्मष नाशन तत्परा
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना,
मणि किरीट सुशोभित मस्तका,
कनक कुंडल भूषित कर्णिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी
विधृत सोमकला जगदीश्वरी,
जलज पत्र समान विलोचना
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा,
निहित पुष्कर वृंदल सत्कारा
समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विविध वांछित कामदुधाद्भूता,
विशद पद्म हृदान्तर वासिनी
सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्र ।।

नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी
सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ।। १ ।।
धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयु: यश: श्रियम्
वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ।।२ ।।
यन्मया वांछितं देवी, तत्सर्वं सफलं कुरू
न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।।३ ।।

।। प्रार्थना ।।

सुंदर आरोग्य निवास करे दृढ तन में ।
आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।
न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।
उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।
तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।
प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से आरती करे - निम्न आरती बोले ।

।। आरती ।।

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।
सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरू पसाय ।।
ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।
ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।
पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ।।
अष्टमपद विंशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

।। अष्टदोहे ।।

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।
जय गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार ।।१ ।।
प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।
चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ।।२ ।।

भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपि जयकार ।
लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ।।३।।
वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।
अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।४।।
केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।
सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ।।५।।
सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाण ।
नाण थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ।।६।।
ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ।।७।।
गुरू गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।
भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ।।८।।

।। लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ।।

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंच वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ।।४।।
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा. तित्थयरा में पसीयंतु ।।५।।
कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

।। नमोत्थुणं का पाठ ।। (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संय-संबुध्दाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध-हत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

(दूसरे में - ठाणं संपाविउकामाणं णमो जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसयस्स अणेगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ कामस्स ।

।। मंगलपाठ ।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते-सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे-सरणं पव्वज्जामि, साहू-सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तधम्मं सरणं पव्वज्जामि। अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।
भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।
पावे पद निर्वाण ।।

यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है । ●

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिन है अत: भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन-मन को एकाग्र कर, रात्री में निम्न जप की २०-२० मालाएँ जपें ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम:

बादमें

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नम:

की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जाप करें।

कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नम:

२० माला फेरें ।

फिर यह प्रार्थना बोले...

कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना
सरोज हत्था कमले निसन्ना
वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था
सुहायसा अम्ह सया पसत्था

इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)

ॐ ह्रीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक, उपाश्रय में जाकर प्रभु का, संतों का दर्शन करें । मांगलिक श्रवण करें । गौतम स्वामी को मध्यरात्री के बाद भली सुबह केवलज्ञान प्राप्त हुआ अत: उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें ।

दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें। सबका भला हो, मंगल हो, कल्याण हो । ●

सन २०२४ चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त

❖ **पुष्प नक्षत्र : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ८**

गुरुवार दि. २४-१०-२०२४ : ✻ सकाळी ६.३० ते ८.०० शुभ ✻ दुपारी ११.०० ते १२.३० चल
✻ १२.३० ते २.०० लाभ, ✻ २.०० ते ३.३० अमृत
✻ सायंकाळी ५.०० ते ६.३० शुभ ✻ रात्री ६.३० ते ८.०० अमृत
✻ ८.०० ते ९.३० चल

❖ **धनत्रयोदशी : (धनतेरस) अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद १३**

मंगळवार दि. २९-१०-२०२४ : ✻ सकाळी १०.३५ ते ११.०० चल
✻ दुपारी ११.०० ते १२.३० लाभ, ✻ १२.३० ते २.०० अमृत
✻ ३.३० ते ५.०० शुभ, ✻ रात्री ८ ते ९.३० लाभ

बुधवार दि. ३०-१०-२०२४ : ✻ सकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ, ✻ ८.०० ते ९.३० अमृत
✻ दुपारी ११.०० ते १२.३० शुभ

❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ३०**

गुरुवार दि. ३१-१०-२०२४ : ✻ सायंकाळी ५.०० ते ६.३० शुभ ✻ ✻ ६.३० ते ८.०० अमृत
✻ ८.०० ते ९.३० चल, ✻ रात्री १२.३० ते २.०० लाभ

✻ वृषभ लग्न कुंभ नवमांश - सायंकाळी ७.१० ते ७.२२ ✻ वृषभ लग्न वृषभ नवमांश - सायंकाळी ७.४८ ते ८.०१

शुक्रवार दि. १-११-२०२४ : ✻ सकाळी ६.३० ते ८.०० चल, ✻ ८.०० ते ९.३० लाभ
✻ ९.३० ते ११.०० अमृत, ✻ दुपारी १२.३० ते २.०० शुभ,
✻ सायंकाळी ५.०० ते ६.०० चल

❖ **नूतन वर्ष : (वीर संवत २५५१, विक्रम संवत २०८१) कार्तिक शुध्द १**

शनिवार दि. २-११-२०२४ : ✻ सकाळी ८.०० ते ९.३० शुभ, ✻ दुपारी १२.३० ते २.०० चल
✻ २.०० ते ३.३० लाभ, ✻ ३.३० ते ५.०० अमृत,
✻ सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ

श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शहा - २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९

प्राकृत भाषेला 'अभिजात भारतीय भाषा' (Classical Indian Language) दर्जा प्राप्त झाला.

प्राकृत भाषेचे अभिजातत्व आणि जैन

लेखिका : डॉ. नलिनी जोशी, मुख्य संपादक – प्राकृत डिक्शनरी, पुणे. मो. : ९४२१००१६१३

प्राकृत भाषेला 'अभिजात भारतीय भाषा' (Classical Indian Language) दर्जा भारत सरकारने ३ ऑक्टोबर २०२४ रोजी दिला आहे. भारतातील व भारताबाहेरची अनेक विद्यापीठे आणि जैन संस्था, जैन तत्वज्ञान आणि प्राकृत भाषांचा अभ्यास करीत आहेत. त्यापैकी अनेकांनी प्राकृतच्या अभिजातत्वाची मागणी व शिफारस सातत्याने केली.

प्राकृत भाषांच्या बाबतीत अभिजातत्वाचे निकष पूर्ण करणे अगदी सहज सोपे आहे. प्राकृत भाषा एक नसून मुख्यतः सात आहेत. सर्वात प्राचीन म्हणजे आर्ष प्राकृत आहे. महावीर वाणी – जी 'अर्धमागधी' भाषेत उपलब्ध आहे. २६०० वर्षांपासून हा प्राकृतचा प्रवाह 'अर्धमागधी', 'शौरसेनी' (तसेच जैन शौरसेनी'), नंतर 'महाराष्ट्री' (तसेच जैन महाराष्ट्री) असे करत करत इसवी सनाच्या दहाव्या शतकाच्या आसपास 'अपभ्रंश' भाषांपर्यंत पोहोचला. भारतातल्या विविध भौगोलिक प्रदेशात असलेल्या अपभ्रंशांपासून आधुनिक आर्य भारतीय भाषा हळूहळू उत्पन्न झाल्या. म्हणजेच मराठी (आणि तिच्या उपभाषा), गुजराती, हिंदी, आसामी, उडिया, बंगाली, पंजाबी, काश्मिरी – अशा सर्व उपलब्ध आर्य भारतीय भाषा क्रमाक्रमाने वेगवेगळ्या प्राकृत भाषांच्या अपभ्रंशांपासून बनल्या आहेत.

सारांश, आपण असे समजू की इ. स. पू. ६०० पासून अर्थातच महावीर वाणी पासून सुरू झालेला प्राकृत प्रवाह आजपर्यंत अविरत वहात आला आहे. उपलब्ध प्राकृत साहित्यातील ८०% साहित्यरचना जैन आचार्यांनी केलेल्या आहेत. २०% प्राकृत साहित्य जैनैतरांनी लिहिलेले आहे. जैन प्राकृत साहित्यातील (अभिजात) समजले जाणारे ग्रंथ म्हणजे विमलसूरींचे 'पउमचरिय', संघदासगणींचे 'वसुदेवीहिंडी', हरिभद्रांची 'समरादित्यकथा' आणि उद्योतनसूरींची 'कुवलायमाला'. ही तर केवळ काही प्रमुख नावे आहेत. याखेरीज जैन आचार्यांनी अनेक गद्य कथाग्रंथ, चरितग्रंथ, प्रकरणग्रंथ, स्तोत्रेही विपुल प्रमाणात लिहिली आहेत.

प्राकृत साहित्यात धार्मिक विषयांबरोबरच सामाजिक, आर्थिक कलात्मक आणि सांस्कृतिक विश्व प्रतिबिंबित झाले आहे. जे भारतीय संस्कृतीच्या कमीतकमी २६०० वर्षांच्या इतिहासावर प्रकाश टाकते.

प्राकृतच्या स्वयंसिद्ध अभिजातत्वावर आता केवळ राजमान्यतेचा शिक्का उमटला आहे. आता प्राकृत भाषांसाठीही निधी येईल. पुरस्कार मिळतील. विद्यापीठात आणि जैन संस्था मध्ये प्राकृतच्या रीतसर अभ्यासाला चालना मिळेल. प्राकृत साहित्यात जैनांचा वाटा खूपच मोठा असल्याने जैन समाजाला ही राजमान्यता खूपच गौरवास्पद वाटेल.

पुण्याच्या 'सन्मति-तीर्थ' संस्थेत सर्व प्राकृत भाषांचा समावेश असलेला महाशब्दकोश बनतो आहे – ही अभिमानास्पद गोष्ट मी या निमित्ताने आपल्या निदर्शनास आणू इच्छिते.

आदरणीय स्व. नवलमलजी फिरोदिया यांच्या मूळ संकल्पनेतून स्फुरलेला, प्राकृत-इंग्रजी-महाशब्दकोश, भांडारकर प्राचविद्या संस्थेच्या सहयोगाने गेली ४० वर्षे सुरू आहे. सात प्रमुख प्राकृत

भाषांमधील ६०० मूलगामी ग्रंथाच्या आधारे तयार होत असलेल्या या कोशाचे आत्तापर्यंत ५०० पानांचे १० खंड प्रकाशित होऊन ११ व्या खंडाचे काम सुरू आहे. यातील शब्दांच्या अर्थाची मांडणी अशाप्रकारे केली आहे की इसवी सनपूर्व काळापासून इसवी सनाच्या १२ व्या शतकापर्यंतच्या प्राकृत ग्रंथात आलेले भारतीयांचे समाज जीवन, तत्वज्ञान आणि सर्व सांस्कृतिक अंगे प्रकट होतील.

सध्या, सन्मति-तीर्थ या संस्थेत, फिरोदिया होस्टेलच्या परिसरात, प्राकृत महाशब्दकोशाचे कार्य अथकपणे सुरू आहे. तसेच जैन तत्वज्ञानाच्या जोडीने प्राकृत भाषांचेही अध्ययन-अध्यापन तेथून चालते. आज मितीला ही खूपच अभिमानाची गोष्ट आहे की विद्यानगरी पुण्यातील सन्मति-तीर्थ संस्थेत प्राकृतचे रीतसर शिक्षण घेऊन तयार झालेल्या जैन महिला, डॉ. नलिनी जोशी यांच्या मार्गदर्शना खाली महाशब्दकोश समर्थपणे पुढे नेत आहेत. प्राकृत भाषांना मिळालेल्या अभिजातत्वाच्या मान्यतेमुळे या महाकाय प्रकल्पास जणू नवी ऊर्जा प्राप्त झाली आहे.

प्राकृत इंग्रजी महाशब्दकोशा मागे आधारस्तंभा प्रमाणे अखंड उभे आहेत सुप्रसिद्ध उद्योगपती डॉ. अभयजी फिरोदिया! ●

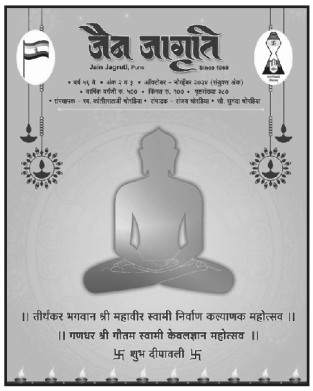

दीपावली व नूतन वर्षाच्या हार्दिक शुभेच्छा !

जैन जागृति – दीपावली अंक

जैन जागृतिचा ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०२४ चा २८० पानाचा भव्य दीपावली अंक प्रकाशित करताना मनापासून आनंद होत आहे. भारतात व परदेशात हजारो परिवारात ''दीपावली पूजन'' जैन जागृति मासिका वरुन केले जात आहे. यासाठी दरवर्षी प्रमाणे दीपावली पूजन विधी व दीपावली पूजन मुहूर्त प्रसिद्ध केले आहेत. जैन धर्म व दीपावली महोत्सव या संदर्भात विविध लेख ❊ पूर्णिमा से भी अधिक उजली व उजाली अमावस्या ❊ पावापुरी तीर्थ ❊ लौकिक एवं अध्यात्मिक पर्व दीपोत्सव ❊ इतिहास बताने आ गई, देखो भैया दुज ❊ ज्ञानपंचमी – क्लेश सब नि:शेष करने ज्ञान की ज्योति जलाएँ ❊ आत्म स्वाधीनता की खोज में शालीभद्र, इ. लेख प्रसिद्ध केले आहेत.

भारत सरकारने प्राकृत भाषेला अभिजातत्व चा दर्जा दिला या संदर्भात डॉ. नलिनी जोशी यांचा ''अभिजातत्व प्राकृतचे आणि मराठीचेही'' हा शोध-लेख प्रसिद्ध केला आहे. ''नैतिक व सामाजिक जीवन में कर्म की उपदेयता'' हा डॉ. वीरचन्द जैन यांचा शोध लेख प्रकाशित केला आहे. अ.भा. समग्र जैन संप्रदाय साधु-साध्वी तुलनात्मक तालिका २०२४, जैन धर्म व महात्मा गांधी, आओ घर को आनंदमय बनाएँ इ. विविध विषयावर अनेक वाचनीय लेख प्रसिद्ध केले आहेत.

सामाजिक प्रश्नावर ❊ संस्कारित समाज का दिमक : प्री वेडिंग फोटोशुट ❊ लडकियाँ क्यों दुसरे समुदाय में जाती है ❊ विवाह एक ज्वलंत समस्या इ. लेख दिले आहेत. त्याच बरोबर समाजातील विविध बातम्या दिल्या आहेत.

जैन जागृति मासिकाला समाज बांधव, व्यापारी बंधु सातत्याने जाहिरात देतात. यामुळेच असे भव्य अंक प्रकाशित करणे शक्य होत आहे. जाहिरातदार, वाचक व लेखक या सर्वांचे आम्ही हार्दिक आभारी आहोत.

या भव्य अंका संदर्भात आपल्या प्रतिक्रीयांचे स्वागत आहे. – संपादक

भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक :
पूर्णिमा से भी अधिक उजली व उजाली अमावस्या

लेखक : डॉ. दिलीप धींग (साहित्य वारिधि) – उदयपुर (पूर्व निदेशक : आन्तराष्ट्रीय प्राकृत केन्द्र)

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का निर्वाण ईस्वी पूर्व ५२७ (विक्रम पूर्व ४७०) में कार्तिक अमावस्या की अर्धरात्रि में साढ़े बहत्तर वर्ष की आयु में अपापापुरी (पावापुरी) में हुआ था। उस दिन भगवान महावीर के दो उपवास थे। राजा हस्तीपाल की रज्जुक सभा में निर्मित समवसरण में लगातार दो दिन से भगवान की देशना (उपदेश-धारा) प्रवाहित हो रही थी। भगवान दुख विपाक और सुख विपाक के ५५-५५ अध्ययन सुना चुके थे। उत्तराध्ययन के ३६ अध्ययन पूरे कर चुके थे। ३७ वाँ मरुदेवी का अध्ययन चल रहा था।

उस समय समस्त श्रमण संघ और श्रमणी संघ उपस्थित था। काशी-कौशल के नौ मल्लवी और नौ लिच्छवी गणराजाओं के अलावा राजा नंदीवर्धन सहित अनेक राजा भी पौषध व्रत लेकर भगवान की देशना सुन रहे थे। समवसरण में बिना थके लाखों की परिषद उनकी देशना श्रवण कर रही थी। विशाल जनमेदिनी के अतिरिक्त अगणित देव-देवियाँ और पशु-पक्षी भी तीर्थंकर महावीर की दिव्य वाणी का अमृतपान कर रहे थे। सभी साँस थामे टकटकी लगाए प्रभु को निहार रहे थे। स्वाति नक्षत्र का योग था। तब भगवान ने पहले स्थूल मन, वचन, काया के योगों का निरोध किया। फिर सूक्ष्म योग का निरोध किया और चौदहवें गुणस्थान में 'समुच्छिन्न क्रिया अनिवृत्ति' नामक शुक्ल ध्यान के बल से चारों अघाती कर्म खपाकर सिद्धावस्था को प्राप्त हुए।

दीपावली का शुभारंभ

तीर्थंकर महावीर के परम पावन और अत्यंत तेजस्वी आभामण्डल और ज्ञानालोक से सम्पूर्ण लोक प्रकाशमान था। उनके निर्वाण के साथ ही एकाएक सर्वत्र अंधकार छा गया। ऐसी स्थिति में उस समय वहाँ उपस्थित नौ मल्लवी और नौ लिच्छवी; काशी-कौशल के इन अठारह गणराजाओं ने निर्णय लिया और सार्वजनिक घोषणा की- ''**गओ भावुज्जोओ, दव्वुज्जोयं करिस्सामो**'' भाव उद्योत, ज्ञान का उजाला विलुप्त होने के कारण उसकी पावन स्मृति को शाश्वत बनाने के लिए हम प्रतिवर्ष आज के दिन द्रव्योद्योत करेंगे, दीपक से रोशनी करेंगे।

इसके अतिरिक्त भगवान के निर्वाण पर एकाएक देवताओं का गमनागमन बढ़ जाने से पूरा भूमंडल आलोकित हो गया था। उस समय अंधकार मिटाने के लिए मानवों ने दीप जलाए। मल्लवी और लिच्छवी गणराज्यों में भी दीप जलाये गये। ग्राम-ग्राम, नगर-नगर और घर-घर में द्रव्य-प्रकाश किया गया। अमावस की वह निशा पुन: प्रकाशमय हो गई। उसी दिन से भगवान महावीर निर्वाण-कल्याणक के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष दीपावली का पर्व मनाया जाता है। दीपावली मनाने का यह सबसे प्राचीन ऐतिहासिक प्रमाण है। इस संबंध में 'कल्पसूत्र प्रवचन' में बहुश्रुत जयमुनि कहते हैं- ''इतिहास साक्षी है कि भगवान महावीर के निर्वाण के बाद भारतवर्ष में दीपावली का त्यौहार प्रारंभ हो गया। इस त्यौहार की लोकप्रियता, सर्वजनग्राह्यता के कारण बाद में संसार के सभी धर्मों ने अपने अपने पूज्य पुरुषों का नाम भी दीपावली से जोड़ दिया। पर ऐतिहासिक तथ्य यह है कि कार्तिक अमावस्या के दिन प्रकाश प्रकट करने का प्राचीनतम उल्लेख कल्पसूत्र के अलावा कहीं नहीं है।''

त्रिशष्टिशलाका पुरुष चरित्र और चउप्पन्न महापुरिस चरिय में भी दीपावली मनाने का सर्व प्राचीन व सर्व प्रथम ऐतिहासिक कारण भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक को ही बताया गया है।

गौतम स्वामी को केवलज्ञान

भगवान ने अपना निर्वाण-समय सन्निकट जानकर प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को देवशर्मा नामक ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के लिए निकटवर्ती ग्राम में जाने के लिए कहा। गौतम स्वामी जैसे विनीत शिष्य दुनिया में बहुत दुर्लभ हुए हैं। जिस समय सारी दुनिया भगवान के दर्शन, वंदन और देशना-श्रवण के लिए उनके समवसरण में आ रही थी। उस समय गौतम स्वामी भगवान की आज्ञा पाकर बिना किंतु-परंतु किए प्रस्थान कर जाते हैं। अर्धरात्रि के पश्चात उन्हें भगवान के मोक्षगमन का समाचार मिलता है तो बच्चे की तरह फूट-फूट कर रो पड़ते हैं। रोते-रोते ही उनकी भावधारा पलट जाती है। तब, भगवान के प्रति सूक्ष्म स्नेह का बंधन भी टूट गया। वे क्षपक श्रेणी में आरूढ़ हो गए। भोर होने होने से पहले ही उन्होंने केवलज्ञान व केवलदर्शन का अक्षय आलोक पा लिया। गौतम स्वामी भक्त से भगवान बन गये। उनके बारे में कहा जाता है-

अहंकारोपि बोधाय, रागोपि गुरुभक्तये,
विषाद: केवलायाभूत् चित्रं श्री गौतम प्रभो:।

अर्थात गौतम स्वामी का व्यक्तित्व अनोखा है। वे अहंकार के साथ भगवान के समवसरण में पधारते हैं और बोध पाकर भगवान के प्रति समर्पित हो जाते हैं। उनका प्रशस्त राग उन्हें गुरुभक्ति के शिखर पर प्रतिष्ठित करता है। वे अनेक भव्यात्माओं को सन्मार्ग पर अग्रसर करते हैं। उनके द्वारा पूछे गए प्रश्न और भगवान द्वारा दिए उत्तर आगम बन जाते हैं। और, अंतिम समय में उनका विषाद भी रूपांतरित होकर उन्हें कैवल्य की ओर ले जाता है। यही कारण है कि आज भी अनगिनत साधक दीपावली की रात्रि में भगवान महावीर की उपासना के साथ ही गौतम स्वामी का स्मरण भी करते हैं। अनेक श्रद्धालु दीपावली को उपवास, बेला, तेला और विविध जप-तप करते हैं।

अंतिम संस्कार

कार्तिक शुक्लपक्षीय प्रतिपदा को भगवान की पार्थिव देह का अग्नि-संस्कार किया गया। अन्तिम संस्कार के समय नौ मल्लवी, नौ लिच्छवी तथा अन्य अनेक देशों के राजा, उनकी प्रजा, भगवान महावीर के ज्येष्ठ भ्राता राजा नन्दीवर्धन एवं उनके परिजन सहित अनगिनत मनुष्य, देवता और पशु-पक्षी थे। सूर और असुरों के सभी इन्द्र अपने अपने परिवार के साथ वहाँ पहुँचे थे। सभी अपने आपको अनाथ महसूस कर रहे थे।

त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र के अनुसार शक्रेन्द्र के आदेश से भगवान के पार्थिव शरीर को क्षीरोदक (दुग्ध-जल) से स्नान कराया गया। फिर गोशीर्ष चंदन का लेप किया गया। दिव्य वस्त्र ओढ़ाया गया। उसके बाद भगवान के पार्थिव शरीर को शिविका में रखा गया। देवताओं ने दिव्य ध्वनि के साथ फूलों की वृष्टि की। मनुष्यों और देव-देवेन्द्रों ने मिलकर शिविका उठाई। निर्धारित मार्ग तय करके वह अंतिम महायात्रा यथास्थान पहुँची।

देवताओं ने अन्तिम संस्कार के लिए गोषीर्ष चन्दन की चिता का निर्माण किया, जिस पर भगवान के शरीर को रखा गया। उस समय असंख्य आँखें नम थीं। सभी वीरप्रभु के स्मरण और ध्यान में लीन हो उस विरल क्षण के साक्षी बन रहे थे। तभी अग्निकुमार देवों ने अग्नि प्रज्वलित की और वायुकुमार देवों ने सुगंधित हवाएँ संचारित कीं। अनेक दुर्लभतम सुगन्धित पदार्थों के साथ प्रभु के चरम शरीर की दाह-क्रिया सम्पन्न हुई। तत्पश्चात मेघकुमार देव ने जलवृष्टि करके चिता शान्त की।

मनुष्य और देवता चिता-स्थल से पवित्र राख और अस्थियाँ ले गये। जब कुछ नहीं बचा तो भक्तगण

वहाँ की मिट्टी ही खोद-खोद कर ले जाने लगे। फलस्वरूप भगवान के अग्नि-संस्कार स्थल पर बहुत बड़ा गड्ढा हो गया। बाद में वह गड्ढा सरोवर में परिवर्तित हो गया। वर्तमान में कमल-पुष्पों से आच्छादित उसी जलाशय में देव विमान के आकार में जलमन्दिर बना हुआ है। बिहार के नालन्दा जिले में स्थित इस पावन निर्वाण भूमि पर प्रतिवर्ष दीपावली पर हजारों श्रद्धालु पहुँचते हैं और वहाँ अपने परम आराध्य भगवान महावीर की उपासना करते हैं।

सुधर्मा स्वामी का आचार्य पदाभिषेक

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा के दिन ही चतुर्विध संघ की उपस्थिति में पंचम गणधर सुधर्मा को भगवान महावीर के प्रथम पट्टधर के रूप में धर्मसंघ का आचार्य नियुक्त किया गया। सुधर्मा स्वामी को प्रथम आचार्य बनाने के लिए आचार्य हस्ती तीन कारण बताते हैं-

१. तीर्थंकर महावीर ने अपने निर्वाण से लगभग ३० वर्ष पूर्व तीर्थ स्थापना के दिन ही आर्य सुधर्मा को दीर्घायु एवं योग्य जानकर गण की अनुज्ञा दी थी। इस बात से चतुर्विध संघ सुपरिचित था।

२. चतुर्विध तीर्थ को यह भी विदित था कि भगवान महावीर की विद्यमानता में ही अग्निभूति आदि ९ गणधरों ने निर्वाण प्राप्त किया। उन्होंने अपने निर्वाण से एक मास पहले ही आर्य सुधर्मा को गणनायक एवं दीर्घायुष्यमान जानकर अपने-अपने गण संभला दिये थे।

३. भगवान के निर्वाण के कुछ ही समय पश्चात् इन्द्रभूति गौतम ने केवलज्ञान पा लिया था। अत: वे भगवान के उत्तराधिकारी नहीं बन सकते थे। उनकी श्रेणी आचार्य से भी उच्चतर हो गई थी। इसके अतिरिक्त आचार्य तीर्थंकर भगवान के आदेश, उपदेश और सिद्धांतों को दृष्टि में रखकर संघ का संचालन करते हैं। किन्तु केवलज्ञानी स्वयं समस्त चराचर के पूर्ण ज्ञाता होने से जो कुछ कहते हैं, वह वे अपने ज्ञान के आधार से कहते हैं, न कि तीर्थंकर भगवान के उपदेश के आधार पर।

सुधर्मा स्वामी प्रभु के निर्वाण के समय १४ पूर्व के ज्ञाता थे, केवली नहीं। वे यह कह सकते थे कि भगवान ने ऐसा फरमाया है। अत: तीर्थंकर भगवान द्वारा प्ररूपित श्रुत परंपरा को अविच्छिन्न रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से इन्द्रभूति गौतम को भगवान महावीर का उत्तराधिकारी न बनाया जाकर आर्य सुधर्मा को ही प्रथम पट्टधर नियुक्त किया गया। इसके अतिरिक्त आज जो एकादशांगी उपलब्ध है, वह आर्य सुधर्मा की वाचना है। जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग-२) में आचार्य हस्ती ने इस तथ्य की पुष्टि में अनेक प्रमाण दिए हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र

भगवान महावीर की अन्तिम देशना का संकलन ग्यारहवें अंग आगम विपाक सूत्र और मूल आगम ग्रंथ उत्तराध्ययन सूत्र में है। 'जैन धर्म की गीता' के रूप में समादृत उत्तराध्ययन सूत्र में छत्तीस अध्ययन हैं। धर्मकथा, चरण-करण, द्रव्य और गणित, ये चारों अनुयोग समाविष्ट हैं। इसमें सभी आगमों का सार आ जाता है। इस आगम में जीवन निर्माण के अनमोल सूत्र और साधना के अनेक रहस्य भरे हैं। इसमें शिक्षाशास्त्र, आचारशास्त्र, नीतिशास्त्र, मानवीय एकता, सामाजिक समता, कर्मकाण्डों की व्यर्थता आदि अनेक उपयोगी विषयों को विभिन्न दृष्टियों और दृष्टांतों से समझाया गया है। इस सूत्र पर अनेक व्याख्यान, विवेचन, अनुसंधान और प्रकाशन हुए हैं। उत्तराध्ययन सूत्र की इतनी महिमा है कि अनेक श्रावक-श्राविकाएँ इसे कंठस्थ करते हैं। इसका सामूहिक, संघीय या व्यक्तिगत रूप से स्वाध्याय करते हैं। जैन समाज में दीपावली के अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र के वाचन और श्रवण की परम्परा है। इसे बहुत मंगलकारी माना जाता है।

सर्वप्राचीन वीर संवत

भगवान महावीर के निर्वाण के अगले दिन कार्तिक सुदी एकम से भगवान महावीर निर्वाण संवत (वीर संवत) की शुरूआत हुई थी। शिलालेखीय साक्ष्य

के आधार पर वीर संवत दुनिया का सबसे प्राचीन संवत है। १९१२ में राजस्थान के अजमेर जिले के बड़ली ग्राम में भगवान महावीर के निर्वाण के ८४ वें वर्ष में लिखा एक षटकोणीय स्तंभलेख मिला, जिसे पुराविद् गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने पढ़ा था। उस पर प्राकृत भाषा व ब्राह्मी लिपि में '८४ वीर संवत' लिखा है। किसी पंचांग (कैलेंडर) का यह सर्वप्रथम व सर्वप्राचीन शिलालेखीय प्रमाण है। यह शिलालेख अजमेर के 'राजपूताना संग्रहालय' में है। प्राचीन ग्रंथों में भी वीर संवत के उल्लेख उपलब्ध हैं।

२५ वीं निर्वाण शताब्दी

भगवान महावीर के निर्वाण का २५००वाँ वर्ष सन १९७३-७४ में देश-दुनिया में मनाया गया था। पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में जैन समाज के द्वारा शिक्षा, सेवा, साहित्य, साधना आदि से संबंधित अनेक स्थायी महत्व के कार्य संपादित किये गये थे। भारत सरकार ने १३ नवम्बर १९७४ को २५ पैसे मूल्यवर्ग का स्मारक डाक टिकट जारी किया था। टिकट पर पावापुरी जलमन्दिर के चित्र के साथ हिन्दी और अंग्रेजी में 'भगवान महावीर की २५००वीं निर्वाण जयन्ती' लिखा गया। इसी निर्वाण कल्याणक वर्ष में जैन आगम साहित्य, संस्कृति और परंपरा के आधार पर जैन धर्म का मंगल प्रतीक तय किया गया, जिसे सभी सम्प्रदायों के आचार्यों, सन्तों और विद्वानों ने अनुमोदित किया। इस जैन प्रतीक के नीचे 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' लिखा गया। यह आदर्ष वाक्य संस्कृत भाषा के प्रथम जैन ग्रंथ 'तत्वार्थ-सूत्र' से लिया गया।

वर्ष २००१ में जब भगवान महावीर का २६००वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया, तब भारत सरकार द्वारा इसी जैन प्रतीक को अंकित करते हुए तीन रुपये मूल्य वर्ग का बहुरंगी डाक टिकट तथा पाँच रुपये का सिक्का जारी किया गया। भगवान महावीर के २५५० वें निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में २१ अप्रेल २०२४ को जारी पाँच रुपये मूल्यवर्ग के डाक टिकट पर भी 'पावापुरी निर्वाण भूमि' के साथ जैन प्रतीक अंकित किया गया।

उल्लेखनीय है कि भगवान महावीर की २५००वीं निर्वाण जयन्ती पर ही १९७४ में सर्वसम्मति से पाँच रंगों वाला जैन ध्वज तय किया गया था। उसी वर्ष भारत-रत्न विनोबा भावे की प्रेरणा से जैन धर्म की श्वेताम्बर-दिगम्बर सम्प्रदायों के प्राकृत भाषा के ग्रंथों के आधार पर 'समणसुत्तं' पुस्तक तैयार की गई थी। देश व मानवता की सेवा के अनेक ऐतिहासिक कार्य भगवान महावीर की २५वीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में हुए थे।

२५५० वाँ निर्वाण वर्ष

पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी के पचास वर्ष बाद पिछली दीपावली से इस दीपावली तक भगवान महावीर का २५५० वाँ निर्वाण कल्याणक वर्ष २०२३-२४ देश-दुनिया में विभिन्न साधनाओं, कल्याणकारी कार्यों और कार्यक्रमों के साथ गतिमान रहा। भगवान महावीर के २५५० वें निर्वाण कल्याणक के साथ ही अनंत लब्धि निधान गौतम स्वामी का २५५० वाँ केवलज्ञान दिवस एवं भगवान महावीर के पट्टधर सुधर्मा स्वामी का भी २५५० वाँ आचार्य पदाभिषेक दिवस भी होता है। भगवान के हर कल्याणक के साथ ये दोनों ऐतिहासिक प्रसंग भी जुड़े हैं। ये प्रसंग सिद्ध करते हैं कि मनुष्य अपने सम्यक पुरुषार्थ से अमावस को भी पूर्णिमा बना सकता है। अमावस को पूर्णिमा से अधिक कल्याणकारी बना सकता है।

युद्ध, हिंसा, असहिष्णुता, असंयम, आतंक और प्रदूषण के दौर में भगवान महावीर का पुनीत स्मरण और उनके उपदेशों का आचरण संसार में सुख-शांति का संचार करने वाला है। उनका हर कल्याणक प्राणीमात्र के कल्याण एवं जनजीवन में अहिंसा, समता, सदाचार और प्रेम का आलोक प्रसारित करने का पावन निमित्त है। इस निमित्त से सबके उपादान शुभ, शुद्ध और समर्थ बनें। ●

इतिहास बताने आ गई, देखो भैया दूज

लेखक : राष्ट्रसंत गणेशमुनि शास्त्री

आज भैया दूज है। बहिन भाई के प्यार का अनूठा पर्व है। कार्तिक मास के पंच पर्वों में अन्तिम या पाँचवाँ पर्व है भैया दूज। कार्तिक शुक्ल द्वितीया, दूज या बीज को प्रातः काल से ही बहिन-भाई के हृदय कमल खिल उठते हैं। जब तक बहिन की शादी नहीं होती, बहिन भाई एक ही घर में होते हैं तो बहिन भाई को प्यार भरा उलाहना देती है-

'भैया, मैं तो नहाकर तैयार बैठी हूँ, तुम भी नहा लो तो तुम्हारा तिलक करके मैं कुछ खा लूँ। मुझे तो भूख लगी है।'

इस पर भाई बहिन को चिढ़ाता है-

'तुझे भूख लगी है तो तू खा ले। मेरे पीछे क्यों पड़ी है?'

बहिन कहती है-

'आज भइया दूज है, तुम जानते हो कि तुम्हें तिलक कर तुम्हें खिलाने के बाद ही मैं खाऊँगी। इसीलिए नहाने में देर करके मुझे परेशान कर रहे हो।'

भाई हँस देता है और बड़े प्यार से कहता है-

'अच्छा अभी नहाता हूँ। लेकिन एक बात तो बता, जब तेरी शादी हो जायगी, तब अपनी ससुराल में तो तुझको मेरा इन्तजार करना ही पड़ेगा। तब भूखी कैसे रहोगी?'

बहिन बोली-

'तब तो शाम तक इंतजार करूँगी। तुम नहीं पहुँचोगे तो दूज से एक दिन पहले या दूज की सुबह मैं ही आ जाया करूँगी और दिनों में तो मैं तुमसे पहले खा लेती हूँ। भैया दूज का दिन ही ऐसा है कि बहिन तिलक करके भाई को खिलाने के बाद ही खाती है।'

प्यार का मानदण्ड : पैसा

तो यह है बहिन-भाई का अनूठा प्यार। राखी के बहिन-भाई के प्यार में तो और भी बातें जुड़ी हैं। लेकिन भइया दूज विशुद्ध रूप से बहिन के त्याग और प्रेम का अनूठा पर्व है। लगभग छब्बीस सौ साल से भाई-बहिन के प्यार की यह अनूठी परम्परा चली आ रही है। यद्यपि भाई-बहिन का प्यार आज भी है, पर इसमें बहुत से परिवर्तन आ गये हैं। परिवर्तन का कारण है, जीवन में पैसे का मूल्य बढ़ना। भाई-बहिन का ही नहीं आज तो हर सम्बन्ध, हर रिश्ते का मापदण्ड पैसा ही है। धन या पैसे के बिना संसार में किसी का काम नहीं चलता। पैसे को त्यागने की बात मैं भी नहीं कहता। एक शायर ने कहा है-

न दुनिया के हो काम धन के वगैर ।
न मुर्दा भी उठता कफन के वगैर ।।

यह सब तो ठीक है लेकिन आदमी को धन का दास तो नहीं होना चाहिए। मनीषियों के शब्दों में आज तो धन की स्थिति यह है- 'अर्थस्य पुरुषोदासो दासस्त्वों न कस्यचित्।' अर्थात् मनुष्य धन का दास है, किन्तु धन किसी का दास नहीं है। मैं कह रहा था कि पिता-पुत्र का, भाई-भाई का, पति-पत्नी का, जितने भी संसार के रिश्ते हैं, सभी का मापदण्ड या पैमाना पैसा है। इस संदर्भ में ठीक ही कहा है-

पैसे बिन तात कहे, पूत है है कपूत मेरौ,
पैसे बिन मात कहे, मोहि दुखदाई है।
पैसे बिन काका कहे, कौन है भतीज तीज,
पैसे बिन सासू कहे, कौन को जमाई है।
पैसे बिन नारी घरबारी घुर्राट करे,
पैसे बिन यार-दोस्त आँख ही छिपाई है।
कहे कवि 'देवीदास' या ही जग साँची भाष,
कलियुग के वर्तमान पैसे की बड़ाई है।

हाँ तो, आज बहिन देखती है, भाई ने भइया दूज की भेंट में क्या दिया? वह अपने पति से कहती है- दूज

की विदा में भाभी ने यह साड़ी दी है। डेढ सौ से ज्यादा की नहीं है। सौ रुपये तो मेरे आने-जाने में ही किराए के लग गए, पचास रुपये की मिठाई ले गई थी। चलो, हिसाब बराबर रहा। भाई-बहिन के प्यार में आज एक गहरी खाई हमारी सरकार ने भी खोदी है।

कुछ समय पहले केन्द्र सरकार ने लड़कियों के लिए एक विधेयक पास किया है। तुम्हें यहाँ भी मिलेगा, वहाँ भी मिलेगा। पिता की सम्पत्ति में बहिन का हिस्सा उसे भाई के बराबर मिलेगा। बहिन अपना हिस्सा माँगती है और लेती भी है तो भाई का मन बहिन से दूर होगा ही। फिर भी ज्यादातर बहनें भाई से हिस्सा नहीं लेती। जो भी हो, अब स्थितियाँ काफी बदल गई हैं। धनोपार्जन की भाग-दौड़ में आज धन तो बढ़ा है, पर समय किसी के पास नहीं रहा। इसलिए भइया दूज पर भाई-बहिन के घर नहीं जा पाता तो बहिन ही दूज का तिलक करने भाई के घर पहुँचती है। जब कभी बहिन भी नहीं जा पाती तो वह 'गोले' का तिलक करके रख देती है। फिर जब भी भाई से भेंट होती है तो भइया दूज का गोला भाई को दे देती है। आज के व्यवहार में औपचारिकता का महत्व बहुत बढ़ गया है।

भइया-दूज का प्रारम्भ कैसे और कब हुआ, इस संदर्भ में मैंने कुछ पंक्तियाँ लिखी थी-

शोक-मन निज बन्धु की, करे बहन मनुहार ।
नन्दीवर्धन भ्रात का, दीन्हा शोक-निवार ।।
दीन्हा शोक निवार, बात हर मन मन में छाई।
तिलक भाल दे बहन, खिलाती भोजन भाई ।।
घर-घर फैली बात, अरु जाने पूरा लोक ।
बहिन निवारण किया, नन्दीवर्धन का शोक ।।

भैया-दूज का इतिहास

आज से छब्बीस सौ वर्ष पहले कार्तिक वदी अमावस्या को भगवान महावीर का परिनिर्वाण हुआ। उनका महाप्रयाण शोक का विषय नहीं था। जीव का मोक्ष-गमन या निर्वाण की उपलब्धि तो मानव जन्म की पूर्ण सार्थकता और सर्वोच्च उपलब्धि है। निर्वाण के लिए मनुष्य को जानें कितने जन्म धारण करने पड़ते हैं। इसे यों कहे तो उपयुक्त होगा-

जनम जनम मुनि जतन करे तब,
अन्त मोक्ष पावै कोई-कोई।

यही कारण था कि भगवान के निर्वाण के समय देवों और मानवों ने दीपमालाएँ सजाकर निर्वाण महोत्सव को प्रकाश पर्व के रूप में मनाया और तभी से दीपावली की परम्परा चली। लेकिन मोह तो मोह ही है- 'मोह सकल व्याधिह्नकर मूला ।' महावीर के महाप्रयाण के शोक में उनके बड़े भाई नन्दीवर्धन बहुत दुखी हुए। शोक-वियोग में वे बिना कुछ खाये बेसुध से पड़े रहे। भाई को यों शोक में डूबा देख उनकी बहिन सुदर्शना की ममता जागी। वे भाई नन्दीवर्धन के पास गईं और उन्हें बड़े प्यार से समझाया-

'भइया ! तुम्हारा भातृ-प्रेम प्रशंसनीय है, पर महावीर केवल मेरे- तुम्हारे ही भाई नहीं थे, वे तो सबके तारनहार मार्गद्रष्टा थे। वे मरे कब ? वे तो अमर हैं। उनका शोक मत करो उठो, स्नान करो और कुछ खाओ। तुम्हारे न खाने से भाभी ने भी कुछ भी नहीं खाया है। भाभी तो भूखी रह सकती है, पर तुम्हारे बिना मैं तो पानी भी नहीं पीऊँगी, उठो भइया, मेरे अच्छे भइया।'

नन्दीवर्धन ने आँखें खोली और बहन सुदर्शना से कहा- 'मुझे भूख नहीं है। मेरा भाई दुनिया के लिए महावीर था, पर मेरा तो प्यारा भाई वर्धमान था।'

सुदर्शना ने नन्दीवर्धन की पुनः मनुहार की ओर उन्हें अपने घर- ससुराल ले गईं। वहाँ उनका शोक कम हुआ। उन्होंने स्नान किया। बहिन ने भाई नंदीवर्धन के रोली-चाँवल का तिलक किया और अपने हाथ से भोजन कराया। फिर स्वयं भी खाना खाया। बहिन सुदर्शना के प्यार और मनुहार से भाई नन्दीवर्धन गद्‌गद् थे। वे बोले-

'यों तो भाई-भाई का प्यार भी अमूल्य है, पर आज मैं देख रहा, हूँ कि बहिन के प्यार के सामने सब

प्यार फीके हैं। हर प्यार में कुछ-न-कुछ स्वार्थ होता है, पर सुदर्शना ! भाई के प्रति बहिन का प्यार तो निश्छल, बिना स्वार्थ का और पवित्र होता है। अतः आज तू भाई से कुछ माँग ले, जिससे बहिन के प्यार की स्मृति सदा बनी रहे।'

'माँगती हूँ, भइया!' सुदर्शना ने कहा- 'आज की तिथि याद रखना, आज कार्तिक शुक्ला दूज है। आज की दूज के दिन तुम हमेशा मेरे घर आओगे। आज की ही तरह में हर साल तुम्हारा तिलक करके खिलाकर ही खाऊँगी।'

'ठीक है सुदर्शना !' नन्दीवर्धन बोले- 'आज की दूज को मैं भइया दूज का नाम देता हूँ। इस दूज को मैं हमेशा तुम्हारे घर आऊँगा।'

यह चिरस्मरणीय घटना पूरे लोक में फैल गई। प्रजा राजा का अनुकरण करती है। सभी बहनों और भाइयों ने भइया-दूज को एक पर्व और एक त्योहार का रूप देकर इसे अक्षुण्ण स्मरणीय बना दिया।

बहन-भाई का प्यार

छब्बीस सौ साल से भाई-बहिन का यह त्योहार चला आ रहा है। भाई हजार हों, पर बहन एक न हो तो भाई का मन उदास रहता है। हर भाई चाहता है कि मेरे भी एक बहन होती। उसके बच्चे मुझे भी मामा कहते। हमारे देश की संस्कृति तो महान है। इसलिए बिना बहिन के भाई धर्म बहिन बना लेते हैं। इसी तरह बिना भाई की बहिन भी धर्मभाई बनाकर भइया- दूज मनाने की अपनी इच्छा पूरी कर लेती है। प्रेमपगी हमारी संस्कृति की यह महानता ही है कि धर्म-बहिन और धर्म-भाई का आपस का प्यार कभी- कभी तो सगे-सहोदर बहिन भाइयों के प्यार को भी छोटा कर देता है।

स्मरणीय प्रसंग

एक प्रसंग याद आ रहा है। जंगल में मजदूरिन लकड़ियों का गट्ठर सामने रखकर इस बात का इंतजार कर रही थी कि कोई राहगीर आये तो उससे यह बोझ उठवा कर अपने सिर पर रखवा लूँ। थोड़ी ही देर बाद दो घुड़सवार उधर से निकले। महिला ने एक को आवाज दी 'ओ भाई ! मेरे इस बोझ को सिर पर रखवा दो।' घुड़सवार निकट पहुँचा। घोड़े से उतरकर उस महिला की लकड़ियों का बोझ सिर पर रख दिया और घोड़े पर सवार होकर अपने गन्तव्य की ओर चल दिया, तभी उसके साथी सवार के अधरों पर मुस्कराहट आई तो उसने पूछा- 'तुम कैसे मुसकरा रहे हो?' साथी सवार ने कहा- 'तुम्हारी अनसुनी पर मुसकरा रहा हूँ। उस महिला ने तुम्हें 'भाई' कहकर बुलाया था। भाई का काम बहिन का बोझ उतारना होता है या बोझ रखना होता है? तुमने उसके भाई शब्द को सुना- अनसुना कर दिया।'

घुड़सवार को अपनी भूल का अहसास हुआ और लकड़ी ले जा रही महिला की ओर घोड़ा दौड़ा दिया, वह अभी थोड़ी दूर ही जा पाई थी कि उसने उसे बहन कहकर पुकारा 'बहन, ओ बहन रूकजा।'

महिला रूक गई। सवार घोड़े से उतरा और बोला बहिन, यह बोझ नीचे रख दे और मेरी बात ध्यान से सुनो - 'आज से तू मेरी बहिन है और मैं तेरा भाई हूँ, आज के बाद तू लकड़ी नहीं बिनेगी। तेरा यह गट्ठर तेरा भाई तेरे घर पहुँचा देगा। मेरा घर तेरे भइया भाभी का घर है। बिना कहे, चाहे जब अपने पीहर चली आना। किसी बात का संकोच मत करना।'

घुड़सवार ने जब अपना नाम-ठिकाना बताया तो उस महिला ने जाना कि वह भद्र पुरुष उसी रियासत का राजा का था, जिस रियासत में वह महिला रहती थी। महिला की आँखें भर आई और वह रोने लगी। भाई ने पूछा- 'रोती क्यों है बहन?' वह बोली- 'ये आँसू तो खुशी के आँसू हैं भइया...!'

हाँ तो, मैं कह रहा था, धर्म भाई और धर्म बहनों के रिश्ते भी बड़े मधुर होते हैं। भइया दूज बहिन-भाई के प्यार को जगाती है। आप सब भाई- बहिन इस प्यार में आये स्वार्थ और पैसे के मूल्य को त्याग कर सच्चे प्यार की अनुभूति करें। ●